Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

ग्रामीण पर्यटन तथा सतत् विकास – SWOT आधरित विश्लेषण

(Rural Tourism and Sustainable Development – A SWOT Analysis)

डॉ. मधु जैन
यूजीसी रिसर्च अवार्ड फैलो
राजकीय कन्या महाविधालय, अजमेर

डॉ. मानक जैन
ऐसोसियेट प्रोफेसर
एस.आर.के.पी. राजकीय महाविधालय,
किशनगढ, अजमेर

सारांश (ABSTRACT) :–

ग्रामीण–पर्यटन, पर्यटन का नवीन रूप है जिसमें पर्यटक ग्रामीण जन–जीवन को महसूस करते है। सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास का दृष्टिकोण बहु–आयामी है। यह समाज में सकारात्मक आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन ला सकता है। गॉवो में मौजूद क्षमता और संसाधनो के आधार पर आय–रोजगार के अवसर, ग्रामीणो के जीवन–स्तर तथा कल्याण में वृद्धि का सकता है। प्राकृतिक संसाधनो को रख–रखाव तथा पर्यावरण–संरक्षण और अर्थव्यवस्था की जीवन–क्षमता में सन्तुलन ला सकता है। ग्रामीण–पर्यटन से गॉवो का चहुँमुखी विकास किया जा सकता है। राजस्थान एक ऐसा मरू–प्रदेश है, जो अपने में गजब का आकर्षण रखता है। अतः ***SWOT****–मॉडल के अनुसार विश्लेषण करते हुए सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास के लिए उचित रणनीतियाँ का सुझाता है। यह अध्ययन ग्रामीण–पर्यटन तथा सतत्–विकास की सार्थकता की जाँच करने का प्रयास है।*

कुंजी शब्द (Key Word):– ग्रामीण–पर्यटन, सतत्–विकास, सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास, राजस्थान, **SWOT** –मॉडल।

प्रस्तावना:–

पर्यटन यानि यात्रा करना अर्थात् पर्यटन घर तथा कार्य स्थल से दूर, आंनद, आराम, ज्ञान–प्राप्ति, धनोपार्जन, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कंतिक आदि से सम्बन्धित क्रिया से 24 घण्टे से अधिक तथा एक वर्ष से कम अवधि की यात्रा करना है।[1]

पर्यटन आज विश्व का सबसे बडा उधोग तथा बाजार का सबसे तेजी से बढता सेवा क्षेत्र है। जिसमें आर्थिक संवृद्धि तथा समाज के सभी घटको की सक्रिय भागीदारी द्वारा सतत् तरीके से रोजगार तथा निर्धनता उन्मूलन की क्षमता है। जैसा कि **विश्व–यात्रा तथा पर्यटन–परिषद (WTTC)** के अनुसार "पर्यटन क्षेत्र (प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष तथा प्रेरित प्रभाव सहित) व्यापक रूप से क्रमशः 7.6 मिलियन डॉलर अमेरिकी डॉलर की आय तथा 292 मिलियन रोजगार प्रदान कर रहा हैं। यह विश्व की 10.2 प्रतिशत **GDP** तथा 10 में से एक रोजगार सृजिम करता है। अगले दशक में कुल वैश्विक शुद्ध रोजगार सृजन में करीब 23 प्रतिशत, **GDP** में 11.4 प्रतिशत वैश्विक-आगंतुक-निर्यात में 7.1 प्रतिशत के

[1] अंजली वर्मा : भारत में पर्यटन विकास एंव संभावनाऐं: ओमेगा पब्लिशर्स, दिल्ली : (2012)।

योगदान की संभवना है''।[2] इस भांति पर्यटन आज विश्व के अधिकाशं देशों में मुख्य आर्थिक तथा सामाजिक क्रिया है। यही कारण है कि पर्यटन के नित नये रूप विकसित हो रहे है, जिनमे ग्रामीण–पर्यटन प्रमुख है। दरअसल बड़ी–बड़ी इमारतो, भाग–दौड और तनावभरी जिन्दगी से कभी–कभी लोग टूट जाते है। ऐसे में कुछ दिन नगरीय भागम–भाग से थोडा दूर जाना चाहते हैं तथा शांति और सुकून से सांस लेना चाहते है। ऐसे में लोगो का ध्यान गांवो की ओर आकृष्ट हुआ है और ग्रामीण–पर्यटन की इस नवीन अवधारणा का जन्म हुआ।[3]

ग्रामीण–पर्यटनः--

ग्रामीण–पर्यटन, गांवों के नैसर्गिक सौन्दर्य, वहॉ के लोगो के रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, सभ्यता–संस्कृति, लोक–कला, नृत्य, गीत–संगीत, खेल, मेले–उत्सव, तीज–त्यौहार, अनुष्ठान तथा संस्कार ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक तथा धार्मिक स्थलों से अवगत कराना हैं।[4] शोर तथा प्रदूषण से दूर, जहाँ गांवो में शोर मचाती चिड़ियों की चहचाहट, मिट्टी से लिपी–पुती दीवारें तथा घास–फूस से छाई झोपडियाँ हैं। बड़े–बड़े पेड़, हरी–भरी धरती, तालाब, झीले, खेत–खलिहान, टेढी–मेढी, उबड–खाबड, कच्ची–पक्की सडके, कहीं बैलगाडियाँ तो कही ट्रैक्टर, निवार बुनी चारपाई पर बैठकर देशी अंदाज में स्थानीय व्यंजनो का स्वाद, पारम्परिक लोक–कलाओ और लोक–गीतों का स्वर–माधुर्य, गांव की सौंधी खुशबू से ओत–पोत किसी दूसरी दुनिया का ही आभास कराती हैं। वहीं दूसरी ओर गांवों में गौरवशाली कला तथ इतिहास का अविस्मित करने वाला खजाना हैं। ग्रामीण–पर्यटन ग्राम्य जीवन का सहज–सरल दर्शन सुलभ कराता हैं। जहाँ लोग अपनी पुरानी विरासत तथा अपनी सभ्यता की जड़ो को नजदीक से निहार सकते है। **ग्रामीणों की सादगी,** ईमानदारी खातिरदारी और खुल मन से की गयी आवभगत तथा मेहमानवाजी देशी–विदेशी पर्यटको को गांवो की और सहज ही आकर्षित करती हैं। भारतीय गांव इस कसौटी पर खरे उतरते है। **महात्मा गाँधी** ने एक बार कहाँ था कि, "भारत गॉवो में बसता है। भारत का ग्राम्य जीवन, **'असली भारत'** की तस्वीर प्रस्तुत करता हैं। आज भी भारत की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी लगभग साढ़े हजार से अधिक गांवों में निवास करती **हैं।**[5]

ग्रामीण–पर्यटन के प्रभाव :–

बहु–आयामी गतिविधि होने के कारण ग्रामीण–पर्यटन के प्रभाव भी बहु–आयामी होते हैं। ग्रामीण–पर्यटन के जरिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बेहतरीन बदलाव किया जा सकता हैं। वहाँ की अर्थव्यस्था बिना अपना वजूद खोये देश की मुख्यधारा से जुड सकती हैं। ग्रामीण–पर्यटन द्वारा, जहाँ गांव में मौजूद क्षमता के आधार पर आय, रोजगार तथा धनोपार्जन के अवसरों का सृजन कर गरीबी दूर करने तथा अकाल-बाढ़ जैसी परिस्थितियों में ग्रामीणो का शहरों की ओर पलायन रूक सकता हैं। गांव सम्पन्न होकर ग्रामीणों के जीवन–स्तर तथा कल्याण में वृद्धि कर सकते हैं। वही दूसरी ओर विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं तथा जीवन–शैली के लोगो को करीब लाकर ज्ञान, सहिष्णुता, सम्मान, राष्ट्रीय

---

[2] वार्षिक रिपोर्टः वैश्विक यात्रा तथा पर्यटन परिषद 2017।

[3] पी. शिव शंकर रेड्डीः रूरल टूरिज्म एण्ड प्रमोशन ऑफ हेंडीक्राफ्टस् इन इण्डियाः कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्लीः (2012)।

[4] वाई. के. शर्माः रूरल टूरिज्म एण्ड डवलपमेंटः कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्लीः (2010)।

[5] मनीत कौरः टूरिज्म टूडेः ओमेगा पब्लिशर्स, दिल्लीः (1992)।

एकता को मजबूती तथा आत्मावलोचन का अवसर प्रदान कर सकता हैं। वहीं इसका उदगम और गंतव्य राष्ट्रो पर भी अपरिमित प्रभाव पडता हैं।[6]

इस भांति ग्रामीण–पर्यटन, गांव के मूल स्वरूप को बनाये रखते हुए ग्रामीणो के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास को सभी स्तरो पर पर सुनिश्चित किया जा सकता है।

वस्तुतः ग्रामीण–पर्यटन मानव, प्रकृति तथा संस्कृति के बीच एक रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है, जिससे ग्रामीण–पर्यटन के माध्यम से पर्यावरण और पारिस्थितिकीय सन्तुलन के साथ ग्रामीण समाज के सतत्/सुस्थिर/पोषणीय विकास को सही अर्थो में परिणीत किया जा सकता है।

सतत्–विकास :–

सततीय विकास शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1980 में विश्व संरक्षण रणनीति के तहत् अर्न्तराष्ट्रीय संघ द्वारा किया गया था। **'ऑवर कॉमन फ्यूचर'** में **विश्व पर्यावरण तथा विकास आयोग के अनुसार,** "सतत्–विकास परिवर्तन की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनो का दोहन, निवेश की दिशा, प्रौधोगिकी का विकास तथा संस्थागत परिवर्तनो की दिशा के मध्य तालमेल हो और जिससे मानवीय आवश्यकताओ को पूरा करने की वर्तमान तथा भावी क्षमताओ में वृद्धि हो।"[7] इसे ही स्थायी, दीर्घकालीन, सुस्थिर, टिकाऊ, निवर्हनीय, संपोषित, धारित, पोषणीय आदि विविध नामो से जाना जाता है।

अतः सतत्–विकास का अर्थ है कि विकास को '**चलते रहना**' चाहिऐं। यह प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि, शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन की सामान्य गुणवत्ता में सुधार और प्राकृतिक/पर्यावरण–संसाधनो की गुणवत्ता अर्थात् कल्याण में सततीय–सुधारों पर बल देता हैं। सततीय–विकास, ऐसा विकास है, जो अनंत होता है और विकास की प्रक्रिया में उन प्राकृतिक प्रणालियों को खतरे में नही डालता है, जिनसे इस धरती का जीवन बना हुआ है। विश्व के सभी वंचित लोगो की मूलभूत आचश्यकताऐं पूरी होने के साथ सभी को बेहतर जीवन जीने का अवसर प्राप्त होता है।

संक्षेपतः सतत् विकास अविच्छिन विकास है, जिसमें अपने जीवन स्तर में सुधार करते हुए अपनी समस्त सम्प्रदा तथा धरोहर को अक्षुण्य रूप से अगली पीढी तक पहुँचाया जा सके।

सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास :–

ग्रामीण–पर्यटन में सतत्–विकास जहाँ एक ओर आर्थिक–विकास को प्राथमिकता देता है, वही दूसरी ओर यह कार्य, संसाधनो के संरक्षण के लिए निर्धारित मानको की सीमा में करता है।

सतत्–पर्यटन–विकास की एक एकीकृत परिभाषा देना कठिन है। सतत्/पोषणीय पर्यटन की प्रमुख भावना **मेजबान अर्थात्** स्थानीय समुदाय, **अतिथि** अर्थात् दर्शक/पर्यटक, तथा **पर्यावरण** के बीच तालमेल स्थाापित करना है। यह **त्रि**पक्षीय सम्बन्ध ही सतत् ग्रामीण–पर्यटन विकास का मर्म है। इसका उद्धेश्य नकारात्मक प्रभावो को न्यूनतम करते हुए सकारात्मक प्रभावो को अधिकतम की सीमा तक पहुँचाना है।[8]

स्पष्ट है कि सतत्–पर्यटन विकास का अर्थ यह कदापि नही है कि विकास को रोक दिया जाये अपितु उसे बनाये रखा जाये और साथ ही पर्यावरण का दीर्धकालीन दृष्टि से प्रबन्धन किया जाए। पर्यटन विकास के साथ–साथ पर्यावरण के प्रति सवेंदनशील होकर उन गतिविधियो को रोकना होगा, जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है। अर्थात्

---

[6] के.के. शर्माः टूरिज्म एण्ड इकोनोमिक डवलपमेन्टः सरप एण्ड सन्स पब्लिकेशनस्, न्यू दिल्लीः (2010)।

[7] एम. एल. झीगंनः विकास का अर्थशास्त्र तथा आयोजनः वृद्धा पब्लिकेशर्स, दिल्लीः (2004)।

[8] आर. के. गोस्वामीः टूरिज्म एण्ड एनवॉरमेन्ट साईबर टेक पब्लिकेशंस्, नई दिल्लीः (2007)।

पर्यटन स्थल पर ऐसे पदार्थो का उपयोग करना होगा, जिससे कूडा–करकट कम हो और स्थानीय उत्पादो का अधिकाधिक प्रयोग हो। इस स्थान की भूमि, भू–दृश्य, जल ,वनस्पति, वन्य–जीवन, तथा वायु संसाधनो एंव ऐतिहासिक तथा पुरा–विरासत को संरक्षित रखते हुए आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण को सन्तुलित रखा जाये।

वस्तुतः सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास वास्तव में विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें ग्रामीण पर्यटन स्थल के वास्तविक स्वरूप तथा पर्यावरणीय रूप को बनाये रखते हुए, उसका समग्र–विकास हो सके। सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास की यह दीर्घकालीन प्रक्रिया मुख्यतः तीन पहलूओ से सम्बन्धित हैं :–

1. **समाजिक तथा सांस्कृतिक संपोषणता :–** ग्रामीण–पर्यटन स्थल के लोगो की सामाजिक मान्यताओं तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को बनाये रखा जाये, ताकि उन ग्रामीणों की संस्कृति की अपनी अलग पहचान बनी रहे और उनके सामाजिक रीति–रिवाज, मान्यताओं, परम्पराओं तथा जीवन–शैली को किसी भी प्रकार की हानि नही पहुँचें।
2. **पारिस्थितिकी संपोषणता :–** ग्रामीण–पर्यटन स्थल के प्राकृतिक पर्यावरण का अवक्रमण नही हो। अर्थात् पर्यटन विकास का उस ग्रामीण–पर्यटन–स्थल की सुन्दरता पर विपरित असर नही पडें तथा पर्यावरण–सन्तुलन और ग्रामीण–विकास में अनुकूल सम्बन्ध बना रहे।[9]
3. **आर्थिक संपोषणता :–** ग्रामीण–पर्यटन स्थल के संसाधनो का उपयोग वहाँ की आर्थिक दशा सुधारें, स्थानीय लोगों के लिए आय तथा रोजगार के नये अवसर सृजित करें, और जल, जमीन,जंगल आदि स्थानीय संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार किया जाये कि भावी पीढी को उन सुविधाओं की उपलब्धता बनी रहे और स्थानीय ग्रामीण अतिथियों का स्वागत कर आनंदित हो सके।

इस प्रकार ग्रामीण–पर्यटन, समग्र–ग्रामीण–विकास की रणनीति का पर्याय हो सकता है। वस्तुतः सतत्–ग्रामीण–पर्यटन का दृष्टिकोण बहुआयामी पहलू पर आधारित है, जिसमें संपोषणता की दृष्टिकोण से सन्तुलित विकास को प्राप्त करना, स्थानीय समुदायो की आवश्यकता के मद्धेनजर, सामान्य जीवन की गुणवत्ता में स्थायी सुधार करना, अर्थव्यवस्था की जीवन–क्षमता तथा पर्यावरणीय–संरक्षण और सम्वर्द्धन का समुचित ध्यान रखा जाना सम्मिलित है।[10]

<u>अध्ययन के उद्धेश्यः–</u> इस अध्ययन के मुख्य उद्धेश्य है :–

1. राजस्थान में ग्रामीण–पर्यटन की क्षमता को मापना।
2. ग्रामीण–पर्यटन की अवधारणा तथा भूमिका जानना।
3. ग्रामीण–पर्यटन में चुनौतियों तथा अवसरों की पहचान करना।
4. ग्रामीण–पर्यटन–विकास के लिए आवश्यकताओं की पहचान करना।

शोध प्राविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनो प्रकार समंको का प्रयोग किया गया। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रो से सुविधाजनक नमूना पद्धति का उपयोग करके सर्वेक्षण, प्रश्नावली तथा साक्षात्कार द्वारा प्राथमिक

[9] एसी कलवारः पर्यावरण संरक्षणः पोईन्टर पब्लिकेशर्स, जयपुर वर्ष 2012।
[10] योजना जुलाईः भारत सरकार, नई दिल्लीः 2012।

समंक एकत्रित किये गये। एकत्रित आकडों का विश्लेषण करने के लिए साधारण सांख्यिकीय उपकरणो का प्रयोग किया गया।

नमूना आकार :– नमूनो में 100 उत्तरदाताओं से सामान्य देश प्रतिचयन विधि द्वारा चुनकर प्रश्नावलियो को भरवाया गया।

परिकल्पना :– ग्रामीण पर्यटन तथा सतत् विकास में कोई सार्थक सम्बन्ध नही है। अतः ग्रामीण पर्यटन विकास से गांवो का स्थाई विकास नही हो सकता है।

SWOT मॉडल के अनुसार प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण :–

S = Strength / ताकत ,

1. गांवो का शांत तथा सुरक्षित वातावरण।
2. ग्रामीण क्षेत्रो में उपलब्ध प्राकृतिक सौन्दर्य के नजारे।
3. ग्रामीण क्षेत्रो में बिखरा अद्वितीय तथा अनूठे हस्तशिल्प का खजाना।
4. चितात्कर्ष तथा उच्च शिल्प कला से विनिर्मित ऐतिहासिक स्थल।
5. स्थानीय खाध पदार्थो की विविधता।
6. स्थानीय गीत–संगीत, नृत्य, खेल, मेले–उत्सव, तीज–त्यौहार अनुष्ठान तथा संस्कार आदि।
7. वनस्पति तथा जंगली जीवन का अवलोकन।
8. शाही रेलगाडी का आकर्षक सफर।
9. आदिवासी समाजो की समृद्ध संस्कृति।
10. ग्रामीणजनो की पर्यटको के प्रति पूर्ण आत्मीयता से खतिरदारी तथा स्वागत–सत्कार की परम्परा।
11. केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय प्रशासन का ग्रामीण–पर्यटन तथा तीर्थ–विकास पर विशेष बल।

W= Weakness / कमजोरी :–

1. उचित तथा पर्याप्त स्वास्थय, संचार, बैकिंग, परिवहन आदि सेवाओ की कमी।
2. ग्रामीण क्षेत्रो में सुविधायुक्त एंव सुसज्जित रहवासो / आवासो की कमी।
3. विशेषज्ञ, पेशेवर, कुशल तथा प्रशिक्षित कर्मिकों की कमी।
4. पर्याप्त आन्तरिक तथा बाहरी प्रचार–प्रसार तथा विपणन की कमी।
5. स्थानीय हस्तशिल्प, तथा अन्य उत्पादों और सेवाओं के लिए हाट बजार जैसी सुविधाओ की कमी।
6. ग्रामीण क्षेत्रों में टोस कचरा–प्रबन्धन तथा सीवरेज की पर्याप्त व्यवस्था का अभाव।
7. ग्रामीण क्षेत्रो में साफ–सफाई तथा स्वच्छता के प्रति पर्याप्त समझ की कमी।
8. ग्रामीणो में अपने गौरवशाली इतिहास, स्थल, कला तथा परम्पराओं को संरक्षित करने की समुचित समझ की कमी।
9. ग्रामीण क्षेत्रो में पर्यटन–विकास में निवेश के लिए निजी क्षेत्रों की कम रूचि।
10. ग्रामीण क्षेत्रो में पर्यटन–विकास सम्बन्धी नीति तथा क्रियान्वयन में विभिन्न सरकारी विभागो औंर एजेंसियों में समन्वय की कमी।
11. ग्रामीण क्षेत्रो में पर्यटन–विकास में मिडिया की पर्याप्त भूमिका की कमी।
12. ग्रामीण क्षेत्रो में पर्यटन–विकास में निजी टूर एण्ड ट्रैवल एजेंसियो तथा ऐजेंटो की कम रूचि।

13. हस्तशिल्प तथा लोककलाओ के विक्रय में सौदेबाजी।

O= Opportunity /अवसर :–

1. ग्रामीण क्षेत्रो में यात्रा तथा भम्रण के लिए ग्रामीण पर्यटन की कुशल मार्केटिंग।
2. विभिन्न परम्परागत खेलों के विकास की संभावनाऐं।
3. पश्चिमी राजस्थान में फैली विशाल स्वर्णिम बालू तथा रेतीलें टीबे।
4. स्थानीय ग्रामीणों तथा पर्यटको के बीच सांस्कृतिक सामांजस्य तथा समन्वय।
5. विशेषज्ञ तथा पेशेवर कर्मचारियों का शिक्षण–प्रशिक्षण।
6. ग्रामीण7पर्यटन कलस्टर/समूह के विकास में सरकार की बढती रूचि तथा भूमिका।
7. भूमि उपयोग कार्यक्रम में, पर्यवेक्षण तथा प्रमुख संरचनाओं के प्रावधान।
8. ग्रामीण क्षेत्रो में उपलब्ध सेवाओं तथा सुविधाओं की प्रस्तुति।
9. सतत्–ग्रामीण–विकास प्रबंधन की उचित विधियों तथा रणनीतियों का दोहन।
10. निजी क्षेत्र के निवेश हेतु खुला विस्तृत क्षेत्र।
11. विभिन्न पर्यटन सेवाआ ंको प्रदान करने हेतु विभिन्न निजी तथा सरकारी–तन्त्र की मौजूदगी।
12. विवाह–स्थल पर्यटन तथा फिल्म–स्थल पर्यटन के विकास की संभावना।
13. ग्रामीण के बीच जागरूकता बढाना।

T= Threat /खतरा :–

1. गांवो के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण में पर्यटकों का अस्वीकार्य व्यवहार।
2. सेवा प्रावधान के लिए विभिन्न ऐजेंसियो तथा सरकारी विभागो के बीच उचित सहयोग का अभाव।
3. अवशिष्ट उत्पादो में वृद्धि।
4. प्राकृतिक संप्रदा का अति–दोहन तथा उपयोग।
5. स्थानीय पारम्परिक संस्कृति की गिरावट।
6. बुनियादी ढांचे के विकास से उत्पन्न पारिस्थितिकी असन्तुलनं
7. जल, जमीन और जंगल के संसाधनो का बढता प्रदूषण।
8. सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावो का नुकसान।
9. परम्परागत जीविका पर दुष्प्रभाव।
10. प्रदर्शन प्रभाव से स्थानीयता को खतरा।

Conclusion/ निष्कर्ष :–

ग्रामीण–पर्यटन, गांवो के देश–भारत में सम्पन्नता के द्वार खोल सकता है। निर्धनता–निवारण, आय और रोजगार–सृजन, पर्यावरणीय–पुननिर्माण तथा दूरदराज के क्षेत्रो के विकास, सामाजिक–एकीकरण तथा सांस्कृतिक–विरासत तथा अन्तराष्ट्रीय–भाईचारा और समझ को बढावा देने के साथ स्थायी–माननीय विकास के लिए ग्रामीण पर्यटन एक महत्वपूर्ण साधन है।[11] इसके द्वारा स्थानीय ग्रामीणजनो के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाकर उन्हे शहरों की ओर जाने से रोका जा सकता है।

[11] ए.के रैना (2009), राजस्थान संस्कृति के विविध आयाम (पधारो म्हारो देश), अभिनव प्रकाशन, अजमेर।

ग्रामीण क्षेत्रो को क्षति से बचाने के लिए अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन नियोजन––क्रियान्वित तथा निगरानी दोनों महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरण–प्रबन्धन, स्थानीय ग्रामीणों की सह–भागिता, व्यापक प्रचार–प्रसार तथा विपणन,[12] जल, जमीन, और जंगल का संरक्षण, विभागो में समन्वय, सतत्–ग्रामीण–पर्यटन–विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। सरकार को स्थायी आर्थिक–विकास तथा सकारात्मक–सामाजिक परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण–पर्यटन को बढावा देना चाहिऐ।[13]

****

[12] www.explore.rualindia.org
[13] www.incredibleindia.org